पैर तले की ज़मीन

मोहन राकेश

दो शब्द

'पैर तले की ज़मीन' को अपनी आँखें मूंद जाने से बरसों पहले राकेश जी ने लिखा था (उसके पहले अंक के तो एकाधिक मसविदे तैयार हुए थे) और जिस दिन वे मुझे एकाएक धोखा देकर सदा के लिए चले गये, तब भी टाइपराइटर पर इसी नाटक का एक पृष्ठ—आधा टाइप हुआ, आधा खाली—लगा रह गया था और कई पृष्ठ, दो-तीन पंक्तियां टाइप और फिर रद्द किये हुए, वेस्ट-पेपर बास्केट में पड़े मिले। 'आधे-अधूरे' की मंचीय और साहित्यिक सफलता के बाद उनकी नाटककार की कोई महत्त्वाकांक्षा इसी नाटक में केन्द्रित और निहित हो रही थी—उनके नाटकों के पाठकों और दर्शकों की आगाह भी।

यह नियति की विडम्बना है कि समूचे नाटक की संयोजना को पक्का लेने के बाद राकेश जी 'पैर तले की ज़मीन' को अधूरा छोड़ गये—चौथा, मांजा अंतिम मसविदा केवल पहले अंक का ही कर पाये। दूसरे अंक की परिकल्पना, उसके रूपबन्ध के
[illegible], इस अंक के कुछ संवाद, उनकी नोट-बुक्स में ही मिले।
[illegible] राकेश जी ने नाटक की पाण्डुलिपि प्रकाशकों को सौंपने की
[illegible] थी जो काल यदि उनसे और हमसे छल
न करता तो एक-दो महीनों में अधिक
[illegible] वह और [illegible] के रिहर्सल ही
[illegible] इस रूप में [illegible]

पात्र

अप्पुकुट्टन : क्लब का काउंटर क्लर्क
शिवरमन : क्लब का चपरासी
परिमल : कुमारी, क्लब का सदस्य
मुत्तुलक्ष्मी : कुमारी, क्लब का सदस्य
मीरा : टेबल टेनिस की अन्तर्राष्ट्रीय खिलाड़ी
रीता : मीरा की सखी
अनूप : एक युवक
निर्मला : अनूप की पत्नी

अनुवर्तन एक

परदा उठने पर भटकती रोशनी मे बार, लाउंज और लान तीनो खाली नजर आते हैं। जहा-तहां पडी जूठी प्लेटों, खाली और भरे हुए गिलासो तथा बिखरे हुए ताश के पत्तो से लगता है कि लोग अभी-अभी अफरा-तफरी मे वहा से उठकर गए है। उस बिखराव और खालीपन को रेखांकित करता संगीत, जिसके मद्धिम पड़ने तक टेलीफोन की घण्टी बजने लगती है। तीन-चार बार घण्टी बज चुकने के बाद अब्दुल्ला हड़बड़ी मे स्टोर से निकलकर आता है। अपनी घबराहट मे टेलीफोन तक पहुचने मे वह एकाध जगह हल्की ठोकर खा जाता है। उसके रिसीवर उठाने पर टेलीफोन भी गिरने को हो जाता है, पर वह किसी तरह उसे सभाल लेता है।

: टूरिस्ट क्लब आफ इण्डिया।…कौन शफी साहब? सलाम साहब।… जी हा, भेज दिया है अयूब साहब को।…नही, अब कोई नही रहा यहां। पुल मे दरार पड़ने की खबर पाते ही सब लोग क्लब खाली कर गए हैं।…हम भी बस चला ही चाहते हैं। स्टोर का सामान मैंने चेक कर लिया है, सिर्फ हिसाब की कापी चेक करनी रहती है। नियामत जब तक दरवाजे बन्द करता है, तब तक मैं…क्या? दरार डेढ़

बिक्री साढ़े सात पेग। और बाकी···(एक बोतल उठाकर) होनी चाहिए छह पेग और है नहीं यह चार पेग भी।

घबराहट में कभी आगे और कभी पीछे की तरफ पन्ने पलटता है।

जैसे खुद बोतलें ही पी जाती हैं अपने अन्दर से। या कोई चुपके से इनके लेबल बदल देता है! (फिर एक बोतल उठाकर) सोलन का हिसाब···

फिर जैसे आवाज सुनकर ठिठकता है और केबिन की तरफ देखता है। केबिन के साथ की खिड़की का दरवाजा हवा से चरमराता है, फिर एकाएक बन्द हो जाता है। बोतल उसके हाथ से गिरते-गिरते बचती है। वह उसे काउंटर पर रखकर फिर कापी में व्यस्त हो जाता है।

सोलन का हिसाब ब्लैक एण्ड ह्वाइट से मेल खाता है और ब्लैक एण्ड ह्वाइट का हिसाब···वह तो मेल खाता ही नहीं। खुदा की भी जैसे अब्दुल्ला से ही दुश्मनी है। जो भी गड़बड़ करनी होती है, मेरी ही कापी में करता है। (पल-भर सोचता रहकर) मेरा क्या है···मैं यहां हिंदसे बदल देता हूं। हिंदसे बदलना कोई बेईमानी नहीं। बेईमानी तो जो मैंने खुद पी हो और हिसाब न रखा हो। (बदले हिंदसों को गौर से देखता हुआ) मालिक बस कापी देखता है। यह नहीं कि दूसरा कितनी जानमारी से काम करता है।···और सब लोग तो जान बचाकर पुल के उस तरफ जा पहुंचे हैं और मियां अब्दुल्ला अब तक यहां बोतलों में शराब नाप रहा है। कापी में हिंदसे ठीक कर रहा है! अगर नहीं···

[illegible] है और [illegible] गया है [illegible]
[illegible] तरफ देखता [illegible]
है [illegible]। इस [illegible]
[illegible] आवाज़ का [illegible] बना रहता है। फिर
वैन यह निश्चय करके कि यह सिर्फ उसका
वहम है, जल्दी जल्दी वाउचर की दराज़
खाने बन्द करने लगता है।

(दराज़ों में ढूँढ़ता हुआ) अब यह हिसाब की कापी कहाँ गई ? (एक दराज़ से कापी निकालकर) रखो कहीं, मिलती कहाँ से है।

जल्दी-जल्दी कापी के पन्ने पलटता हुआ उसमें

सी···

मैं तुझसे पूछ रहा हूं कि···(बात याद न आने से) वह क्या था जो मैं तुझसे पूछ रहा था अभी ?

अभी तू सिर्फ चिल्ला रहा था। पूछना अभी बाकी था।

(याद करने की कोशिश में) मैं वहां से यहां आया था ···क्यों आया था ? तुझे मैंने आवाज दी थी···किसलिए दी थी ?

: (चलने को होकर) मैं दरवाजे बन्द कर रहा हूं। तू सोच ले तब तक, किसलिए दी थी।

: रुक-रुक-रुक-रुक-रुक। (दिमाग पर जोर डालता हुआ) वहां से यहां आया, यहां आकर आवाज दी···आवाज इसलिए दी कि कि कि कि··· तू हमेशा यही करता है। कोई न कोई उल्टी बात छेड़कर मुझे असली बात भुला देता है।

: असली बात तेरे लिए होती ही वह है जो तुझे भूल जाती है। जो याद रह जाए, वह सिर्फ बात होती है, असली बात नहीं।

चल देता है

: (उतावली में) ए ए ए···अब चल कहां दिया तू ?

नियामत रुककर गहरी नजर से उसे देखता है।

अच्छा हां···दरवाजे बन्द करते···पर देख···(थूक निगल·कर) मैं कह रहा था कि···कि हम लोग साथ ही चलें बाहर। कहीं ऐसा न हो कि···कि तुझे याद न रहे और··· मेरा मतलब है कि तू···तू दरवाजे बन्द करके उधर से ही चला जाय और···और···

: और तू अन्दर बन्द होकर शराब की बोतलें सूंघता रह जाए। न्‌-न्‌-न्‌-न्‌-न्‌-न्‌-न्‌ !

मत : शफी साहब नाराज हो रहे हैं।···यहां तो कम्बख्त को ढोकर ले जाने में कन्धे टूटने को आ ग साहब हैं कि नाराज ही हुए जा रहे हैं।

ल्ला : (असमंजस में केबिन की तरफ देखता हु मतलब है कि तू···मियां अयूब को सचमुच आया है···

मत : नाम मत ले उस आदमी का। पी-पीकर इम हो रहे थे जनाब कि ठीक दरार पार करते लुढ़क गये।

ल्ला : लुढ़क गये?

मत : और क्या? दरिया की तरफ लुढ़क गये।

ल्ला : (आतंकित) यानी कि···लुढ़क ही गये?

मत : मैं वक्त से सभाल नहीं लेता, तो अब तक सात टुकड़ों में बटकर पानी में सात मील निकल गये होते।

ल्ला : (आश्वस्त) कह रहा है लुढ़क गये। जब सभाल लिया, तो लुढ़क कैसे गये? लुढ़क जाने का मतलब तो होता है कि···

केबिन में जोर की ठक्-ठक्। साथ गिलास टूटने की आवाज।

···तू मियां अयूब को अगर छोड़ आया है बाहर, तो यहां केबिन में यह कौन आदमी है?

मत : केबिन में एक नहीं, दो आदमी हैं।

ल्ला : दो आदमी?

मत : पण्डित और झुनझुनवाला।

ल्ला : (पस्त) ये दोनों यहीं हैं अब तक?

मत : ताश खेल रहे हैं।

फिर चलने लगता है।

[illegible]

पण्डित [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।

निज़ामत [illegible]

अब्दुल्ला वाह सुब्हान अल्लाह । [illegible] है ?

निज़ामत कि [illegible] बुजुर्गियत [illegible] बना रहे [illegible] —बस यही एक मक्सद है । [illegible] ।

[illegible] का पर्दा [illegible] और [illegible] कुर्सियों पर बैठे हैं । पण्डित की शेरवानी और [illegible] हैं जिनसे उनकी [illegible] और [illegible] बाहर नज़र आ रहे हैं । चेहरे से [illegible] वाले आदमी की परेशानी [illegible]

अंदाज से, जो मुसकराने से लेकर जुआ खेलने तक हर काम नाप-तोल के साथ करता है, कुरसी की पीठ से टेक लगाये पण्डित के पत्ता चलने की राह देख रहा है। आंखों में जीतने वाले आदमी का आत्मविश्वास है।

पत्तों की जोड़-तोड़ (करता हुआ, बिना नियामत की तरफ देखे) सुन गया अब तुम्हें?…एक ब्लैक एण्ड व्हाइट। बड़ा।

एक पत्ता चलता है, जिसे उठाकर झुनझुनवाला अपने पत्ते खोल देता है।

डक्लेयर।

(कुछ खीज के साथ अपने नंबर गिनता हुआ) दस सात तेरह दस सत्ताईस…सत्ताईस और पन्द्रह बयालीस। (पत्ते खोलता हुआ, नियामत की तरफ देखकर) नहीं सुना अब भी?

माफ कीजिए, साहब। बार बन्द हो गया है।

बन्द हो गया है?…क्यों?

क्योंकि…

मुझे एक ही और चाहिए। आखिरी।

अब्दुल्ला भी अब काउंटर से हटकर वहां आ जाता है।

आखिरी पेग अब पुल के उस तरफ चलकर मिलेगा, साहब!

क्यों?…उस तरफ चलकर क्यों मिलेगा?

क्योंकि पुल टूट गया है, बार बन्द हो गया है।

. क्या कहा?…पुल टूट गया है?

: (कागज पर हिसाब जोड़ता हुआ) बयालीस और एक सौ

नियामत : यह भी तब की बात है जब मैं अयूब साहब को छोड़कर उधर से आया था। (पण्डित से) इसलिए सारा क्लब खाली करा लिया गया है। इस वक्त सिर्फ हमी चार आदमी हैं यहां।

> तभी मंच के बाहर बायी तरफ से टेबल-टेनिस खेलने की आवाज सुनाई देने लगती है।

अब्दुल्ला : (स्तब्ध) और ये कौन लोग हैं उधर···टेबल-टेनिस रूम में ?

नियामत : कौन लोग हो सकते हैं ? मैंने अभी थोड़ी देर पहले एक-एक कमरा देख लिया था।

अब्दुल्ला : देख लिया था, तो ये खेल कौन रहे हैं उधर ? हम लोगों के साये ?

> नियामत गहरी नजर से अब्दुल्ला को देखकर उधर को चल देता है। पण्डित अपनी शेरवानी के बटन बन्द करने लगता है। झुनझुनवाला मेज से ताश-वाश समेटता है। अब्दुल्ला काउंटर पर आकर अलमारी में ताला लगाने की कोशिश करता है पर बदहवासी में वह उससे लग नहीं पाता।

पण्डित : (उठता हुआ) अगर चलते-चलते एक मिल जाता न आखिरी···

> टेबल-टेनिस की आवाज रुक जाती है। नियामत बाहर निकलने लगता है कि उधर से तेजी से आती नीरा उससे टकरा जाती है। उसका रैकेट हाथ से छूटकर परे जा गिरता है।

नीरा : दिखता नहीं कोई सामने से आ रहा है ?

नमूनेवाला [illegible] पंडित जी [illegible]
[illegible] मनाइये [illegible]

पंडित [illegible]

[illegible] है।
[illegible] है [illegible]
[illegible] है
[illegible]

नीरा [illegible]।

अब्दुल्ला [illegible] नहीं है ?

नीरा [illegible] क्या कर रही है ?

अब्दुल्ला [illegible] बहुत [illegible] ?

नीरा [illegible]

अब्दुल्ला ([illegible]) [illegible] निजामन [illegible] रहा है [illegible] गुड़िया
[illegible] गुड़िया [illegible]।

नीरा गुड़िया [illegible] नहीं है अब।

अब्दुल्ला [illegible] है अब [illegible] वह

नीरा [illegible] है [illegible]।

निजामन ([illegible]) [illegible] पर [illegible]
[illegible] नहीं।

नीरा अभी [illegible] नहीं [illegible] है वहां [illegible]
[illegible] ([illegible]) [illegible] पानी का [illegible]
[illegible] ?

निजामन : तुम [illegible] का [illegible] हो क्या ?

नीरा : [illegible]।

निजामन : तो है [illegible] मे...

अब्दुल्ला : हाँ, कल तक यहीं न बैठे रहना है तुझे। अब जाकर लाना नहीं है उसे···इसकी बुड्ढी दीदी को···स्विमिंग पूल से ?

नीरा : वह खुद ही आ जाएगी अभी। गीले कपड़े बदलने गई है वहाँ।

अब्दुल्ला : तो अब तक क्या वह गीले कपड़ों में ही···

नीरा : तुझे मतलब ? तू मुझे पानी का गिलास क्यों नहीं देता ?

अब्दुल्ला : पानी-वानी का गिलास नहीं मिल सकता इस वक्त।

नीरा : पानी का गिलास क्यों नहीं मिल सकता ?

> नीरा पल-भर अब्दुल्ला को देखती रहती है, फिर नियामत की तरफ देखती है, फिर गिलास खुद ही खोजने लगती है।

पण्डित : सुना झुनझुनवाला···पुल टूट गया है ! (हल्की हँसी के साथ) तब तो मौका ही इधर बैठकर पीने का है। नहीं ?

> अब्दुल्ला दस बीस ताले को ठोक-पीटकर बन्द करने की कोशिश करता है, पर वह नहीं बन्द होता, तो उसे लटकता छोड़कर काउंटर से आगे आ जाता है।

अब्दुल्ला : मौका तो है साहब, पर पीने को कुछ नहीं है। बार बन्द हो चुका है। आपको जो कुछ चाहिए, वह अब उधर चलकर ही मिल सकता है।

पण्डित : मौका इधर बैठकर पीने का है, और जो कुछ पीना हो, वह उधर चलकर ही मिल सकता है। इधर बार बन्द हो चुका है, उधर पुल टूट गया है। वाह !

> अखबार समेटकर शेरवानी के बटन बन्द करता हुआ केबिन से बाहर आ जाता है।

पर अभी बार बन्द कहाँ हुआ है ? ताला तो ऐसे ही

अब्दुल्ला [illegible]

नीरा [illegible] रहा है

अब्दुल्ला [illegible] ?

नीरा [illegible]

अब्दुल्ला [illegible] दीवार
[illegible] रहा है
[illegible] इसकी गुम्बा
[illegible] टूटा था । शीशा [illegible]

नीरा गुम्बा शीशा वहां नहीं है अब ।

अब्दुल्ला वहां नहीं है अब । तो कहां गया वह

नीरा उधर क्या है स्विमिंग पूल पर ।

नियामत (पास आकर) स्विमिंग पूल पर — पर स्विमिंग पूल का गेट तो मैं आजकल खोलता ही नहीं ।

नीरा तभी तो रोज दोपहर को हम नहाने जाते हैं वहां — टूटी दीवार फांदकर । (अब्दुल्ला से) तुमसे मैंने पानी का गिलास मांगा था ?

नियामत तुम लोग रोज दोपहर को नहाती हो वहां ?

अब्दुल्ला : हां, कल तक यहीं न बैठे रहना है तुझे। अब जाकर लाना नहीं है उसे···इसकी गुड्डो दीदी को···स्विमिंग पूल से ?

नीरा : वह खुद ही आ जाएगी अभी। गीले कपड़े बदलने गई है वहां।

अब्दुल्ला : तो अब तक क्या वह गीले कपड़ों में ही···

नीरा : तुझे मतलब ? तू मुझे पानी का गिलास क्यों नहीं देता ?

अब्दुल्ला : पानी-वानी का गिलास नहीं मिल सकता इस वक्त।

नीरा : पानी का गिलास क्यों नहीं मिल सकता ?

> नीरा पल-भर अब्दुल्ला को देखती रहती है, फिर नियामत की तरफ देखती है, फिर गिलास खुद ही खोजने लगती है।

पण्डित : सुना झुनझुनवाला···पुल टूट गया है ! (हल्की के साथ) तब तो मौका ही इधर बैठकर पीने नहीं ?

> अब्दुल्ला इस बीच ताले को ठोक-पीट करने की कोशिश करता है, पर वह नहीं होता, तो उसे लटकता छोड़कर आगे आ जाता है।

अब्दुल्ला : मौका तो है साहब, पर पीने को कुछ नहीं है। बार बन्द हो चुका है। आपको जो कुछ चाहिए, वह अब उधर चल कर ही मिल सकता है।

पण्डित : मौका इधर बैठकर पीने का है, और जो कुछ पीना हो, वह उधर चलकर ही मिल सकता है। इधर बार बन्द हो चुका है, उधर पुल टूट गया है। वाह !

> अखबार समेटकर सेठ जी के बटन बन्द करता हुआ केबिन से बाहर आ जाता है।

पर अभी बार बन्द नहीं हुआ है ? ताला तो ऐसे ही

[illegible]

अब्दुल्ला : [illegible] दिन की होगी।

पण्डित : किसी औरत के अंदर [illegible] हुआ है ? कौन औरत के अंदर [illegible] ?

अब्दुल्ला : (रुककर) [illegible]

उसके स्वर की आकस्मिकता से पल-भर सब [illegible] रहते हैं।

कुछ हो रहा है।

नियामत : तेरा मतलब है कि

अब्दुल्ला : तुमे नहीं सुन रहा ?

नियामत : (पल-भर सुनता रहता है) हाँ। लगता यही है

पण्डित : सचमुच ?

नियामत : लगता यही है।

मुनवाला : तो क्या इतनी जल्दी

अब्दुल्ला : मैं कब से कह रहा था।

[illegible] — [illegible] थी।

[illegible] — [illegible]

[illegible] — [illegible]

रीना — [illegible]

[illegible] — [illegible]

[illegible] है।

निज़ामन — [illegible]।

रीना — हाँ, वही और उसके साथ एक औरत

अब्दुल्ला — उसके साथ औरत

[illegible] — [illegible] था।

रीना — हाँ, एक औरत

पण्डित — औरत!

…नवाला — उसके साथ?

…यामन — फिर हुआ क्या उनका?

रीना — वे दोनों थे बड़ा पुल पर अब पुल [illegible] हिलने लगा बुरी तरह हिलने लगा मैं [illegible] पुल से लौट रही थी

मीरा — पुल हिलने लगा?

रीना — और जब पु

नीरा : पुल टूट गया ?

रीता : पूरा नहीं; पर किसी भी वक्त पूरा टूट सकता है।

नीरा : जरा देखूँ···

रीता को लिये-लिये उसी ओर जाती है, जिधर से रीता आई थी।

पण्डित : तब तो जरूर डर की बात है। क्यों अब्दुल्ला ! कम से कम तेरे लिए तो है ही। क्योंकि किसी भी वक्त पुल पूरा टूट सकता है।

अब्दुल्ला : क्यों, सिर्फ मेरे लिए क्यों ?

पण्डित : क्योंकि मुझे अपने लड़के को देखने जाना है। यहाँ तो न कोई देखने को है, न दिखाने को। उस पार पहुँच गए, तो वहाँ पड़े रहेंगे। न पहुँचे, तो यहाँ भी कुछ बुरा नहीं है। अच्छा-खासा बार है। अगर ज्यादा नहीं, तो दस-बीस दिन बैठकर पीने का सामान तो मिल ही जाएगा।

अब्दुल्ला : (अलमारी पर नजर डालकर) दस-बीस दिन ? नहीं, सामान तो यहाँ इतना है कि···(सहसा रुककर) पर मैं भी क्या बात सोचने लगा ? दस-बीस दिन हम लोग यहाँ थोड़े ही न पड़े रहेंगे ? हाँ, इस बात का अफसोस जरूर है कि इतना सामान जो हम लोगों ने अभी-अभी मँगवाया था—यह सोचकर कि सीजन में काफी बिक्री होगी—यह सब ज्यों का त्यों पड़ा रहेगा। न जाने कितने दिन। नबी साहब का यह पहला साल है ठेके का, और अगर इसी साल उन्हें घाटा उठाना पड़ा, तो···तो अगले साल फिर अपने पर वही बेकारी आ जाएगी। चार साल बेकार रहने के बाद इस साल नबी साहब की मेहरबानी से यह नौकरी मिली थी—अब आगे इसका भी पता नहीं कि रहेगी या नहीं।

[illegible] ... अब वशा ... [illegible]
[illegible] ... उसका ... [illegible]
[illegible] ... मुझे
[illegible]

अब्दुल्ला — [illegible] ... का मतलब नहीं कर [illegible] ... कुछ आसरा है वह बस नौकरी का [illegible] है — और [illegible] बचपन की जिन्दगी में और कोई काम [illegible] ... यहीं काम [illegible] ... इसी कमरे में कारमैन था, तब इसी तरह [illegible] आता थी। उस [illegible] जो [illegible] ... अगर आपका [illegible] ... तो

नियामत — [illegible] वह किस्सा फिर से शुरू करता है, तो मैं बाहर से ताला लगाकर जा रहा हूँ। तू यहाँ इत्मीनान से बैठकर किस्सा सुना। साथ इन्हें ब्लैक एण्ड व्हाइट की बोतल भी खोल दे।

अब्दुल्ला — ब्लैक एण्ड व्हाइट की बोतल! ह्ह! पहले ही मेरा ब्लैक एण्ड व्हाइट का हिसाब ठीक नहीं बैठ रहा। अभी जाकर [illegible] साहब को आज का हिसाब दूँगा, तो इसकी डाँट और खानी पड़ेगी। ठहर, हिसाब की कापी मैंने यहीं दराज़ में डाल दी है। वह तो मुझे साथ ले जानी चाहिए।

जल्दी से आकर दराज़ खोलता है।

यह रही कापी, और यह… (अचानक पण्डित की तरफ देखकर) अरे! आपके चित्र का पेमेंट तो अभी हुआ ही

नहीं।

स्वेटर की जेब टटोलकर उसमें से निकालता है।

यह आपका बिल है—तेरह रुपये कुछ पैसे का

नियामत बिल उससे लेकर पण्डित को '

नियामत : बिल तेरह रुपये कुछ पैसे का नहीं, सत्रह रुपये कुछ ५ का है।

अब्दुल्ला : सत्रह या तेरह जितने का भी है, अभी से इसका पेमेंट कर दें। (कापी निकालकर उसमें काट-छाँट करता हुआ) मैं भी कहूँ कि हिसाब में इतना फर्क कैसे पड़ रहा है।

पण्डित : (बिल लेकर) फर्ज कर इस वक्त इतने पैसे मेरी जेब में न हों।

अब्दुल्ला : आपकी जेब में, और पैसे न हों··· यह कैसे हो सकता है?

पण्डित : जब और इतना कुछ हो सकता है, एक अच्छा-खासा पुल टूट सकता है, तो यही क्यों नहीं हो सकता?

नियामत : (चिढ़कर अब्दुल्ला से) क्या खामखाह वक्त क्यों बरबाद कर रहा है? बिल का पेमेंट बाद में नहीं हो सकता? उधर पहुँचकर नहीं हो सकता?

पण्डित : क्यों···हो सकता है न उधर पहुँचकर? तो बस अभी चल रहे हैं···एक मिनट में।

देखानी की सलवटें निकालता हुआ बरामदे की तरफ चल देता है।

नियामत : देखिए मिस्टर पण्डित···

पण्डित : कहा है न अभी एक मिनट में चल रहे हैं। बस अब आ ही रहे हैं जरा उधर गुसलखाने तक होकर। आओ मुनमुनवाला, तुम भी हल्के हो लो······

था वहीं का वहीं रहता है। अभी परसों
था, उसीकी वजह से तो शर्मा साहब
जाने की छुट्टी नहीं दी।

इसी बीच नीरा और रीता
हैं, अपने बीच कुछ बातें करती हुई।

ा : पर बता अब मैं इसमे क्या कर सकता हू ? बोतलों . हिसाब ठीक रखता हूं, तो किसी न किसी बिल में गड़बड़ हो जाती है। बिलों का हिसाब ठीक रखता हूं, तो बोतलों की नाप-जोख में फर्क पड़ जाता है। (दराज से एक पोस्टकार्ड निकालकर) इन्हीं सब उलझनों में घर से आयी चिट्ठी का जवाब भी अब तक नहीं दे पाया। वे लोग वहां न जाने क्या सोच रहे होंगे! कि कैसा आदमी है—खुशखबरी पाकर मिलने आना तो दूर, चिट्ठी की पहुच तक का पता इसने नहीं दिया गया।

ा : अब इसे घर की याद सताने लगी! तू पानी का गिलास देता या नहीं? कब से मांग रही हू।

ा : अब कुछ नहीं मिलेगा। गिलास भी अलमारी में बंद किए जा चुके हैं।

...) तू इनसे बातचीत करना बाद में, पहले मुझे ... मांग दे।

... चाहिए ? उनसे मुझे

... यहां तशरीफ ले आएं,
...

[illegible] अनिता ..., यो [illegible] भी [illegible]

[illegible]।

अनुसूया [illegible], फिर [illegible] नहीं किया [illegible] कि आपको [illegible] [illegible], [illegible] है। [illegible]।

पण्डित [illegible]। [illegible]

[illegible] अस्पताल [illegible] है।

अनुसूया (अनुसूया [illegible] अस्पताल की तरफ [illegible] जाती है। [illegible] पानी [illegible] निकास की गई है, [illegible] में [illegible] हुए हैं।)

पण्डित अनुसूया, अगर निकास [illegible] और [illegible] [illegible]।

निदामत (अनुसूया से) [illegible] पानी का निकास, नहीं तो बाद में यह [illegible] दरिया में [illegible] नजर आयेगी। मैं जब तक [illegible] की तरफ देख आऊँ... वह [illegible] [illegible]

फिर बरामदे की तरफ चल देता है। अब्दुल्ला त्योरी के साथ अलमारी खोलकर उसमें से गिलास निकालता है, और पानी भरकर उसे गुस्से से काउंटर पर रखता है।

अब्दुल्ला : यह लें पानी···

पण्डित : (अखबार से सिर उठाकर) अब्दुल्ला, सिगरेट का पैकेट।

अब्दुल्ला : ओह! सिगरेट का पैकेट!

फिर से अलमारी खोलकर उसमें से पैकेट निकाल लेता है।

यह रहा आपका पैकेट। पर इसके पैसे···

पण्डित : पैसे तुझे बिल के साथ ही वसूल हो जाएंगे। अहा सत्रह रुपये कुछ पैसे हैं, वहां साथ ढाई रुपये और जोड़ लेना।

अब्दुल्ला : (कुछ हड़बड़ाहट के साथ जेबें और दराज टटोलता हुआ) बिल के साथ···पर हां···देखिए बात यह है कि···वह जो बिल है न···(दूसरा बिल निकालकर देखता है, पर कुछ सोचकर उसे फिर जेब में रख लेता है) खैर, यह बात इस वक्त नहीं, बाद में करने की है। ये पैसे अगर आप··· खैर मैं इन्हें बिल में ही जोड़ देता हूं।

बिल फिर से निकालकर उसपर पेंसिल से लिखने लगता है।

पण्डित : (उठकर उसकी तरफ आता हुआ) बिल तो तेरा मेरे पास है। यह तू किसके बिल में पैसे जोड़ रहा है?

अब्दुल्ला : मैंने आपसे कहा है न···यह बात मैं आपसे बाद में करूंगा। अभी, बाहर चलकर। इस वक्त पहले मैं···

नीरा इस बीच दोनों को देखती रहती है। फिर अचानक वहां से चल देती है।

देख लिया कितनी अच्छी लड़की हूं मैं ?

बायीं तरफ से चली जाती है। अब्दुल्ला मुंह में कुछ बड़बड़ाता हुआ काउंटर से आगे आने लगता है कि तभी टेलीफोन की घण्टी बज उठती है। घण्टी सुनकर झुनझुनवाला भी नींद से जैसे जागता है, और शोक में उठकर फिर बाथरूम की ओर चला जाता है।

अब्दुल्ला : (जाकर रिसीवर उठाता हुआ) यह पांचवीं दफा शफ़ी साहब का फोन आया है। (रिसीवर में) हलो…शफ़ी साहब ?…क्या ?…कौन ?…मिसेज हुल्दवानी ?…यहां की मेम्बरशिप फीस ?…आज यहां की मेम्बरशिप फीस कुछ नहीं है।…मैं कौन हूं ?…मैं कोई नहीं हूं… जी, मैं क्लब में कुछ भी काम नहीं करता, आप कल फोन कीजिएगा। (झटके से रिसीवर रखकर) कहती है बम्बई से आयी हूं, मेम्बर बनना चाहती हूं। बस आज ही तो एक दिन है जिस दिन इसे मेम्बर बनना है।

टेलीफोन से हटकर आते हुए एकाएक जैसे कुछ सुनने के लिए रुक जाता है।

यह आवाज़ पहले से ऊंची नहीं हो गयी ?

पण्डित : कौन-सी आवाज़ ?

अब्दुल्ला : दरिया के पानी की।

पण्डित : तेरे वहम का भी कोई इलाज नहीं। अब और कुछ नहीं, तो दरिया की आवाज़ ही तुझे ऊंची सुनायी देने लगी।

अब्दुल्ला : वहम की बात नहीं है, आप ज़रा ठीक से सुनिए। मुझे लगता है कि दोनों दरियाओं में पानी बढ़ रहा है। मैं दोनों की आवाज़ें अलग-अलग सुन सकता हूं। (लान के

पार रैकेट की तरफ़ इशारा करके) यह क्रिकेट से सम्बन्ध है और ··(खिड़की की तरफ़ इशारा करके, यह ज्योग्राफ़ी से ताल्लुक की है। मैं इन आवाज़ों से अच्छी तरह वाक़िफ़ हूँ क्योंकि ·क्योंकि ·आपको पता है मुझे दिल का दौरा कब से पड़ना शुरू हुआ है '

पण्डित मेरा तो ख़्याल है कि पैदा होने के दिन से पड़ना शुरू हो गया होगा।

अब्दुल्ला नहीं हुज़ूर, मुझे दौरा पड़ना शुरू हुआ है सन् ... पहले भी इसी तरह एक बार बाढ़ में फँसा रह गया था। तब क्लब का इंचार्ज एक क्रिकेटर्स के पास था और मैं इसी तरह यहाँ सर्वेन्ट था। बाढ़ में क्लब के अन्दर चार आदमी फँस गए थे—ठेकेदार, मैं और दो बैरे। इधर से ग़िरजे का पानी यहाँ बरामदे तक आ गया था, और उधर से दरयाव के पानी ने आधी सीढ़ियाँ मोड़ दी थीं। हम लोगों ने क्लब का सामान साथ लेकर पूरी रात इस हाल की छत पर काटी थी। पानी जिस तरह बढ़ रहा था उससे लगता था कि घण्टे दो घण्टे में अन्दर वह हमारे सिरों के ऊपर से होकर बहने लगेगा। उफ़! वह रात और उसके बाद आज की शाम—मुद्दतें तक से इस छत की तरफ़ आँख उठाकर देखा भी नहीं जाता। मुझे दिल का पहला दौरा उसी रात छत पर लेटे-लेटे पड़ा था।

पण्डित ख़ैर, आज तुझे दिल का दौरा नहीं पड़ेगा क्योंकि उससे पहले ही हम लोग तुझे लेकर क्लब से बाहर पहुँच जाएँगे।

अब्दुल्ला वह तो ठीक है साहब, मगर कहने की बात सिर्फ़ इतनी है कि- -

नियामत घबराया हुआ बरामदे की तरफ से आता है।

नियामत : (पास आकर अब्दुल्ला से) पता है अब और क्या हुआ है?

अब्दुल्ला : क्या हुआ है?

नियामत : बस कुछ पूछ नहीं।

दायीं तरफ कैंटी में दरवाज़े से जाने लगता है।

अब्दुल्ला : (घबराए हुए स्वर में) आखिर कुछ बताएगा भी कि क्या हुआ है?

नियामत : (जाते-जाते) अयूब साहब सचमुच फिर पुल पार करके अन्दर चले आये हैं—अपनी बेगम को साथ लेकर! मैं तो मज़ाक समझ रहा था ···पुल के पार छोड़कर आया था उन्हें···

अब्दुल्ला : अपनी बेगम को साथ लेकर! उनकी बेगम इस वक्त यहां क्या करने आई हैं? सच-सच बता···

नियामत : यकीन नहीं है तो खुद बाहर देख लें ···मुझको ठीक यह नहीं थी···पर आ गया है। मैं ऊपर, उस तरफ भी देख लूं · क्या हाल है। शायद उधर···· अब निकलना मुश्किल होगा।

परेशान-सा चला जाता है।

पण्डित : इसका मतलब है कि पुल से आने-जाने में कोई खास दिक्कत नहीं है।

अब्दुल्ला : हम यहां से उस पार जाएंगे या उस पार से आनेवालों के लिए यहां रहेंगे? यह भी कोई बात हुई! हम उधर जाने की तैयारी में हैं, लोग इधर आ रहे हैं!

पण्डित : लेकिन हम लोग चलेंगे तो तभी न जब के दोनों

[illegible] आपको अद्दू साहब और उनकी बेगम [illegible] और [illegible] ऊपर की [illegible]

अब्दुल्ला सुनिए [illegible] गौर से सुनिए। सुना कुछ है?

पण्डित क्या

अब्दुल्ला [illegible] आवाज़। क्या नहीं लगता जैसे कोई [illegible] आवाज़ [illegible] रहा हो?

पण्डित मुझे तो कुछ नहीं लग रहा। पानी की आवाज है—वैसी ही जैसी हमेशा सुनायी देती है।

अब्दुल्ला हमेशा यह आवाज़ क्या नसन्द देती है?

पण्डित दरयाओं में पानी ज़्यादा होने से कुछ ऊंची सुनाई देती होगी—बस इतना ही फर्क है।

अब्दुल्ला इतना ही फर्क है? पर आप शायद इस फर्क को नहीं समझ सकते। अगर वह रात मेरी तरह यहां काटी होती, तो आप भी इस फर्क का मतलब समझते थे। मुझे लगता है कि अब और यहां रहना खतरे से खाली नहीं है।

पण्डित तो तू चाहता क्या है? तू अभी कह, अभी यहां से चल दें।

अब्दुल्ला चल तो दें पर वे दोनों लड़कियां? और वो अद्दू साहब और उनकी बेगम। इन सबको छोड़कर कैसे जाया जा सकता है? आप थोड़ी देर यहीं ठहरें, मैं अभी सबको जमा करके लाता हूं। (चलते-चलते) पर आप तब तक यहीं ठहरेंगे। कहीं जाएंगे नहीं ''मैं अभी आ रहा हूं—बाहर सब लोग साथ-साथ चलेंगे। ठीक है न?

पण्डित : हां, ठीक है। मैं तेरे आने तक यहीं हूं—तू फिक्र मत कर।

पीछे की तरफ देख लेता है।

अब्दुल्ला : बस, मैं अभी आ ही रहा हूं।

बायीं तरफ से चला जाता है। पण्डित अपना छोड़ा हुआ अखबार फिर से उठाकर काउंटर पर कुहनी रखे उसमें से समाचार पढ़ने लगता है :

पण्डित : आदमी अन्तरिक्ष में…एक सौ नब्बे घण्टे पचपन मिनट। अन्तरिक्ष में आदमी की उड़ान के चार नये रिकार्ड। चढ़ती कीमतों को नीचे लाना असम्भव। वित्त मंत्री की नयी कर-योजना।…उत्तर प्रदेश के संवैधानिक संकट के सम्बन्ध में अभी कोई निर्णय नहीं।…दो-दो रुपये के नये नोट …चीफ कमिश्नर का बयान—नल के पानी के कीड़े नुकसानदेह नहीं।

इस बीच पीछे लान में अयूब की दुबली-सी आकृति नजर आती है। जमा-जमाकर पैर रखता हुआ बरामदा पार करके वह हाल में आता है। वह चौबीस-पच्चीस साल का नवयुवक है—चेहरे की हड्डियां निकली हुई हैं। गहरे रंग का सूट पहने है। टाई और कालर मुचड़े रहे हैं। हाथ में ह्विस्की का आधा खाली गिलास है जिसमें से वह अन्दर आकर …ूंट भरता है। बात करते हुए …वाज में नशे का असर

क्या कह रहे हो…क्या नुक-

उसकी तरफ देखता है और

आया ही नहीं। कम-से-कम मैंने उसे नहीं देखा।

अपूर्व : यही नियामत भी कहता था—कि वह नहीं आया। मैंने सोचा कि अब आये ही हैं, तो एक बार देख तो… चाहिए। पर डाक्टर तो डाक्टर, और भी कोई नहीं आसपास नजर नहीं आया। नजर आये कुछ ताश के बिखरे हुए पत्ते, कुछ मूंगफली के छिलके, कुछ चूरा हुए येफर्ज, कुछ मसली हुई प्लास्टिक की थैलिया, और यह गिलास। इनके अलावा एक फिसले हुए पाव का निशान है, और एक सैंडल का बायां पैर। आदमी सच कितने डरपोक होते हैं! नहीं?

पण्डित : नियामत कह रहा था कि कोई और भी शायद तुम्हारे साथ पुल पार करके आया है।

अपूर्व : आया है? आया नहीं, आयी है। और आते-आते मे ही अभी दरिया मे गिर गयी होती।

पण्डित : दरिया में गिर गयी होती? पर कौन थी वह जो…?

अपूर्व : थी नहीं, है। वह मेरी बीवी है सलमा…आज मुझे यही उसे डाक्टर से मिलाना था।

पण्डित : पर अगर टूटा पुल पार करने में सचमुच खतरा था, तो ऐसे में उसे पार कराना…यह बहुत जरूरी था क्या?

अपूर्व : खतरा-अतरा कुछ नहीं था। मैं एक छलांग में उस तरफ से इस तरफ आ गया था। पर बेगम बेचारी डर रही थी, इसलिए ऐसा हुआ। कहा न, डाक्टर से उसे मिलाना था।

पण्डित : डाक्टर से मिलाना था! कुछ तबियत खराब है?

: नहीं, कुछ रिश्ते खराब हैं। मेरे और मेरी बीवी के… हमें कुछ गहरी बातें डाक्टर से करनी थी। डाक्टर मेरी बीवी का बचपन का दोस्त है…अब समझे कुछ तुम?

[illegible] रहा है।

पण्डित उस बीच आ[illegible] एक कुर्सी पर धम[illegible] गया है। फिर जेब से [illegible] देखता है कि उसमें [illegible] अबदुल्ला [illegible] को [illegible] कुर्सी पर पैर फैला[illegible] था, जैसे उसे नींद [illegible]

पण्डित — अबदुल्ला, सिगरेट निकालो [illegible] उसमें से मेरे लिए [illegible] गया। बड़ा [illegible]।

अबदुल्ला — (थोड़ा मुसकराकर) मैं [illegible] पण्डित, [illegible] चलकर ही [illegible] वाला।

पण्डित — अच्छा [illegible]

आदमी फिर वापस नहीं आ सकता क्या ?

असदुल्ला : जी हां, वापस आने के लिए इससे अच्छा वक्त और कौन सा हो सकता था ! (आकर रिसीवर उठाने लगता है, रिसीवर उठाकर) हलो एक्सचेंज—मुझे थ्री टू वन चाहिए—हलो हलो हलो—थ्री टू वन नहीं, थ्री वन टू चाहिए—थ्री, वन, टू—क्या हुआ है ? (रिसीवर रखकर) अब यह नंबर ही नहीं मिलने का।

पण्डित : तू किसे फोन कर रहा था ?

असदुल्ला : डाक्टर साहब को, और किसे करता ?

पण्डित : नंबर मिल जाय, तो जरा मुझे भी देना। मुझे भी उससे एक बात करनी है।

असदुल्ला : आपको भी इसी वक्त बात करनी है ! इसके बाद भला कभी बात करने का वक्त मिलेगा ?

मधुप : मियां असदुल्ला, तू खफा किस बात पर हो रहा है ? वैसे जब तू खफा होता है, तो तेरे चेहरे पर गजब-सी रौनक आ जाती है। और जब वह रौनक आ जाती है, तो तू खफा नहीं जान पड़ता। खैर, भाभी से पूछ लेना कि अगर डाक्टर वहां उसके पास हो, तो एक बात उसे बता दे। कह दे कि हम दोनों यहां पहुंच गये हैं, और उसका इंतजार कर रहे हैं।

असदुल्ला : यह तू कि ,

परिव्राजक [illegible]

अनुज [illegible] भी नहीं [illegible] । [illegible]
[illegible] भी नहीं [illegible]

परिव्राजक [illegible]
[illegible] है या तुम भी [illegible]

अनुज ([illegible]) [illegible] और [illegible] भी [illegible]
[illegible] है [illegible]
[illegible]
मैं—[illegible]
[illegible] तुम्हारी [illegible]
[illegible] भी नहीं [illegible]

[illegible] आता है, [illegible]
और [illegible] रहता है। [illegible]
[illegible] बीच में ही [illegible]

आदमी फिर वापस नहीं आ सकता क्या ?

अब्दुल्ला : जी हां, वापस आने के लिए इससे अच्छा वक्त और कौन सा हो सकता था ! (जाकर रिसीवर उठाने लगता है, रिसीवर उठाकर) हलो एक्सचेंज—मुझे थ्री टू वन चाहिए—हलो हलो हलो—थ्री टू वन नहीं, थ्री वन टू चाहिए—थ्री, वन, टू—क्या हुआ है ? (रिसीवर रखकर) अब यह नंबर ही नहीं मिलने का।

पण्डित : तू किसे फोन कर रहा था ?

अब्दुल्ला : डाक्टर साहब को, और किसे करूंगा ?

पण्डित : नंबर मिल जाय, तो जरा मुझे भी देना। मुझे भी उससे एक बात करनी है।

अब्दुल्ला : आपको भी इसी वक्त बात करनी है ! इसके बाद भला कभी बात करने का वक्त मिलेगा ?

अयूब : मियां अब्दुल्ला, तू खफा किस बात पर हो रहा है ? वैसे जब तू खफा होता है, तो तेरे चेहरे पर अजब-सी रौनक आ जाती है। और जब वह रौनक आ जाती है, तो तू खफा नहीं जान पड़ता। खैर, शादी से पूछ लेना कि अगर डाक्टर उसके पास हो, तो एक बात उसे बता दे।

यहां पहुंच गये हैं, और उसका इंतज़ार

[illegible] की बेगम यहां डाक्टर का इंत- [illegible] इस तरह डाक्टर को और यहां

[illegible] का वक्त दे रखा था। और [illegible] री है···क्योंकि बेगम नीम- [illegible] मरी है···

[illegible] आना हुआ) बेगम नीम-

उनकी तबियत ज्यादा खराब है ?

अपूर्व : उसकी तबियत उतनी खराब नहीं है जितना वह डर गयी है। डर गयी है क्योंकि उसका पांव फिसल गया था। अगर किसी तरह संभल न जाती, तो हो सकता था कि···

पण्डित : हां, तुमने बताया था कि वह दरिया में गिरते-गिरते बची है।

अपूर्व : अब मैं सोच सकता हूं कि वह क्यों इतना डर गयी है। वह डाक्टर को शायद केस नहीं करना चाहती।

पण्डित : केस नहीं करना चाहती ?

अपूर्व : इस बात को छोड़ो। क्या तुम सोच सकते हो कि मियां-बीवी के रिश्तों के बीच अगर कोई छाया भी आ जाए, तो क्या से क्या हो सकता है···गलत मत समझना··· मेरी बीवी की जिंदगी में और कोई नहीं है, पर मेरे लिए वह एक कब्रिस्तान बन गई है···औरत कब्रिस्तान क्यों बन जाती है ?

पण्डित : क्यों बन जाती है ! शायद उसके भीतर कुछ मर जाता है···

अपूर्व : लेकिन क्यों मर जाता है ?

पण्डित : इसके लिए हर आदमी की अपनी अलग वजह हो सकती है। उसकी अपनी वजह होगी।

अपूर्व : हां, वह तो होगी ही।···भाभी बता रहा था कि कलकत्ते में तुम्हारा ऊन का कारखाना है ?

पण्डित : हां, है तो सही। पर उसका इस बात से क्या ताल्लुक है ?

अपूर्व : ताल्लुक यह है कि तुम सिर्फ ऊन का काम कर सकते हो। आदमी के अकेले रहने की बात नहीं समझ

[illegible] [illegible] हल्के [illegible] बात [illegible] [illegible] करें [illegible]
[illegible] [illegible]

पण्डित [illegible] और [illegible] [illegible] तुम्हारी [illegible]
[illegible] [illegible] रहे थे ?

अनूब [illegible] रहा था। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रही थी। [illegible]

पण्डित और [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
तुम [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मिजाज पड़े
थे ?

अनूब [illegible] मतलब है कि [illegible] [illegible] [illegible] बात [illegible]
रहा [illegible] वह सचमुच [illegible] इन्सान आदमी है।

पण्डित इन्सान ! क्या ?

अनूब [illegible] इन्सान आदमी जो [illegible] [illegible] [illegible] के लिए
[illegible] गुजरता रहता है। [illegible] इन्सान न होता, तो तुम्हें
[illegible] बारे में और मुझे तुम्हारे बारे में इतनी बातें न
बताता। (पण्डित [illegible] की तरफ बढ़कर) तुम और
आओगे भी ?

पण्डित नहीं, अभी नहीं।

अनूब [illegible] तुम [illegible] [illegible] शराब पीना पसन्द नहीं
करते। तुम मेरे घर के लड़ाई झगड़े का जिक्र क्यों कर
रहे थे ?

पण्डित : इसलिए कि तुमने खुद इसका जिक्र मुझसे किया था...तुम
अपनी बीवी की बात मुझसे कर रहे थे। नहीं ?

अनूब मैं अपनी बीवी की बात तुमसे कर [illegible] था...औरतों
बात ?

पण्डित : यही —औरत के अभिमान बन जाने की बात...यानी

यह भी कह रहा था कि उसे डर है कि कहीं ··

अयूब : कि कहीं मेरी बीवी खुदकशी न कर बैठे ? (हंसकर) यह बात उसने एक बार हौले से मुझसे कही थी। तब मुझे लगा था कि यह बह इसलिए कह रहा है कि शायद मेरी बीवी को मुझसे पिण्ड छुड़ाने का यही एक रास्ता नज़र आता है। लेकिन शफी मेरा दोस्त है, और भला आदमी भी है। इसलिए उसने बहुत हौले से यह बात मुझसे कही थी···मेरे साथ दोस्ती निभाने के साथ-साथ वह अपनी मनमनसाहत को भी खतरे में नहीं डालना चाहता। (एक घूट में गिलास खाली करके) और वह जानता है कि मैं भला आदमी नहीं हूं।

> गिलास को काउंटर पर लुढ़का देता है जिससे वह काउंटर के अन्दर की तरफ गिरकर टूट जाता है।

पर तुम जो बात कह रहे थे, मैं उसीको लेकर पूछता हूं—यह नहीं हो सकता कि आदमी शिद्दत से सोचने का आदी हो, इसीलिए उसका घर में लड़ाई-झगड़ा हो ? इसीलिए वह सामने के गड्ढे को न देख सके, और उसकी गाड़ी एक पत्थर से जा टकराए ?

पण्डित : और उसका हाथ एक गिलास को भी ठीक से न रख सके, जिससे वह दूसरी तरफ गिरकर टूट जाए।

अयूब : मैं गिलास की कीमत अदा कर सकता हूं, उसकी तुम फिक्र मत करो।

> पल भर खामोश रहकर कश खींचता रहता है। फिर लाउंज में तिपाई की तरफ जाकर उसपर रखी ऐश-ट्रे में अपना सिगरेट बुझा देता है।

टुकड़े उधर कैसे बिखर गए ?

पण्डित : कैसे भी बिखर गए—तू पाव संभालकर रखना। पहने भी तू यह घिसी चप्पल है जिसमें जाने कितने सूराख हैं।

> अब्दुल्ला पैर संभालता हुआ काउंटर के पीछे जाकर जल्दी से अलमारी खोलता है, और उसमें से ब्रांडी की बोतल और एक गिलास निकालता है।

अब्दुल्ला : कहा नहीं था मैंने आपसे कि पानी की आवाज तेज होती जा रही है ? पर आपका ख्याल था कि यह मेरा वहम है—मेरे कान अपने अन्दर से ही ऐसी आवाज सुन रहे हैं। अब चलकर देख लीजिए न कि दोनों दरिया आपस में मिल रहे हैं या नहीं—यह आवाज रोज इस तरह सुनायी देती है ?

> गिलास में थोड़ी-सी ब्रांडी डालता है। फिर उसमें से थोड़ी वापस बोतल में डालता है।

पण्डित : यह ब्रांडी किसके लिए ले जा रहा है ?

अब्दुल्ला : अब्दुल साहब की बेगम के लिए।

पण्डित : उनकी तबियत सचमुच ज्यादा खराब है क्या ?

अब्दुल्ला : (गिलास लिए काउंटर से आगे आता हुआ) इसका मुझे पता नहीं। यह बात या अल्लाह मियां जानता है, या नियामत मियां। एक तरफ मुझसे कह रहा है कि जल्दी से उनके लिए ब्रांडी ले आ और दूसरी तरफ कह रहा है कि···

> सिर हिलाकर चुप कर जाता है।

पण्डित : क्यों, चुप क्यों कर गया ?

अब्दुल्ला : क्योंकि दूसरी तरफ के बाद एक तीसरी तरफ ...

यह बाँदी मैंने तुम्हारे लिए डाली है।

पण्डित कुछ कहने को होता है, पर जैसे अपनी बात दबाकर बाहर निकल जाता है। अयूब स्टूल से उठकर लाउंज के बीचोंबीच आ जाता है।

टेलीफोन की घण्टी फिर बज उठती है। वह गिलास से एक घूंट भरकर उसे तिपाई पर रख देता है, और जाकर रिसीवर उठा लेता है।

अयूब : (रिसीवर में) हलो···हां-हां··· हूं, यही नर हूं,··· खतरा ? खतरा कोई नहीं है···कौन ? डाक्टर ?··· वह वहीं है ?··· तुम्हारे पास ?··· हां-हां, आयी है··· वह भी यहीं है···क्या ?··· वह आना चाहता था ?··· तो उससे कहो न, अब भी आ जाए···आसार अच्छे नहीं हैं···नहीं हैं, तो क्या हुआ ? वह आना चाहे तो···क्या ? किसका ख्याल ?···अपना ?··· दूसरों का ? दूसरा इस वक्त यहां कोई नहीं है···

सहसा उसकी नजर बरामदे से आती हुई गुड्डी पर पड़ती है। गुड्डी के चेहरे और हाव-भाव में वह ताजगी है जो तैरने के बाद शरीर में आ जाती है। उसके कपड़े बिल्कुल नयी तरज के हैं, पर भीगने से उनकी क्रीज मर चुकी है। बाल कटे हुए हैं, पर चेहरे पर सिवाय हल्की लिपस्टिक के कोई भी मेक-अप नहीं है। वह अपना पर्स हिलाती हुई हाल में आकर कुछ परेशानी के साथ इधर-उधर देखती है।

रीता : क्या बात है ?

अपूर्व : तुम्हें शायद···मुझसे डर लग रहा है। मैं कहना चाहता था कि अच्छा होगा···अगर···तुम···

रीता : अगर मैं···

अपूर्व : अगर तुम···कल को···आज के साथ मिलाकर न देखो··· हो सकता है कल की वजह से···

रीता : कल का जवाब तुम्हें कल ही नहीं मिल गया था ?

अपूर्व : वही तो मैं भी कह रहा हूं···कि कल की बात···कल के साथ थी। और जहां तक आज का सवाल है···आज के लिए···मुझे तुमसे इतना ही कहना है कि···

रीता : आज के लिए मुझसे कुछ भी कहने की जरूरत नहीं है। अगर कोशिश करोगे कहने की, तो मैं अभी बाहर चल दूंगी···

अपूर्व : वह तो खैर मुमकिन ही नहीं है···मतलब बाहर चल सकना।···क्योंकि अभी-अभी अब्दुल्ला कह गया था कि फिलहाल किसीको भी उधर न आने दिया जाए।

रीता : (रुककर) क्यों ? अब्दुल्ला कौन है हमें रोकने वाला ? कौन हो मुझसे यह कहने वाले ?
कोई भी आदमी कौन है, यह क्या वह कभी सोचता है ?

मधुप : यही कि एम० ई० एस० का कहना है कि अब किसीको भी पुल पर आने-जाने न दिया जाय। इसलिए हो सकता है कि जितने लोग यहाँ हैं, उन सबको आज रात-भर यहीं रहना पड़े।

रीता : (कुछ घबराहट के साथ) रात-भर यहीं रहना पड़े ? यह कैसे होगा ?

मधुप : कैसे भी हो…अगर रहना पड़ेगा…तो रहना ही पड़ेगा।… बल्कि हो तो यह भी सकता है कि…हम लोग…आज रात के बाद कल दिन भर…और कल दिन भर के बाद फिर कल रात भर…यहीं रुके रहें…और पुल ठीक होने में न आए।

रीता : ये सब फिजूल की बातें हैं। हम लोग सालों से यहाँ आते हैं। ऐसा कभी आज तक नहीं हुआ।

मधुप : इसलिए तो और भी मुमकिन है…कि आज ऐसा हो जाय।…जो कभी नहीं हुआ होता…वह होने लगता है, तो…(चुटकी बजाकर) बस ऐसे हो जाता है।… बहरहाल…तुम उस लड़की को खोज रही थी न…

रीता : (अपने को थोड़ा सहेजकर) हाँ…वह ज़रा-सी बात से मुझसे नाराज़ होकर जाने किधर निकल गयी है।

मधुप : लड़कियाँ…बहुत जल्दी नाराज़ हो जाती हैं।…खास तौर से…छोटी उम्र की लड़कियाँ। नहीं ?

रीता : (कुछ सकपकाकर) वह इसी बात पर तो मुझसे नाराज़ हुई है…कि उसे छोटी उम्र की क्यों समझा जाता है। इतना कह दिया कि यह बात भी जो वह पूछ रही है, क्या बच्चों जैसी नहीं है ? और यह कि अभी चौदह की तो वह हुई नहीं, फिर अभी से अपने को बड़ी समझने का शौक उसे क्यों चर्राया है ? बस इसी बात

[illegible]

'—मगर अपना [illegible] बनाए रखा हूं। [illegible] निक
[illegible] ही याद है—अपना [illegible] आदि लगता है किसी तरह
बनाया जा सकता है—कुछ और दूर तक, फिर कुछ
और दूर तक। (ब्राडी का एक और घूंट भरते हथेली-
[illegible] हमी के साथ) और कल का वह हादसा! क्या
सता होगा इन लोगों ने कि कितना खबीस हूं मैं! राह
[illegible]लने एक नावाकिफ लड़की का हाथ पकड़कर अपनी
[illegible]फ खींचना—इससे बड़ी हिमाकत क्या हो सकती थी?
: क्या सचमुच वह हादसा शराब के [illegible]

था जैसा कि ये लोग समझते हैं ? क्या मैंने जान-बूझकर ऐसा नहीं किया था जिससे कि दस आदमियों के बीच मुझे जलील होना पड़े ? जिससे कि इसकी खबर श्रीनगर पहुँचे और वे लोग जान जाएँ कि वह खोल, वह भरम, जिसे वे बनाये रखना चाहते हैं, मैंने तोड़ दिया है ?

> तभी टैरेस की ओर से आकर नीरा झांकती है।

गुड्डो दीदी ! गुड्डो दीदी !···यहाँ भी नहीं हैं ? उफ्···

यह वही लड़की है जिसे गुड्डो खोज रही थी और यह गुड्डो को खोज रही है···(बरामदे की तरफ जाता हुआ) ओ लड़की···क्या नाम है तेरा···सुन, इधर आ।

> नीरा एक बार घूमकर उसकी तरफ देखती है, और फिर टैरेस से उतरकर बायीं तरफ भाग जाती है।

ओ लड़की···किधर जा रही है तू ? तुझसे कहा है इधर आ। सुन नहीं रही तू ? ओ···क्या नाम है तेरा··· सुन···

> लान में से होकर वह भी बायीं तरफ से चला जाता है। कुछ क्षण मंच खाली रहता है। बादल की गरज के साथ हल्की वर्षा का शब्द सुनायी देने लगता है। बरामदे के पार अँधेरा गहरा होता जाता है। सहसा टेलीफोन की घण्टी बजने लगती है। कुछ क्षण बजने के बाद घण्टी बन्द हो जाती है। हवा के झोंके से तिपाई पर रखी पत्र-पत्रिकाएं फड़फड़ाती हैं। रीता दायीं तरफ से आती है।

अनुवर्तन दो

मंच में कोई परिवर्तन नहीं है, सिवाय इसके कि बिजली की बत्तियां गुल होने से चार-छः जगह बड़ी-बड़ी मोमबत्तियां जला दी गई हैं। अंगीठी में लकड़ियां सुलग रही हैं : उनकी आंच में भी हल्की रोशनी है। कुछ टूट चुका है। तेज बारिश हो रही है। पर्दा उठता है तो मधुर और उसकी पत्नी सलमा ही नज़र आते हैं। पण्डित और मीरा कहीं बाहर हैं। अब्दुल्ला और नियामत भी बाहर हैं। तेज़ बहुत पानी और चलती तेज़ हवा का स्वर। मधुर और सलमा चादर ओढ़े के पास गुमसुम बैठे हैं। पीछे से अब्दुल्ला और नियामत की आवाजें आ रही हैं।

नियामत हो ! इधर पानी आ गया है···

... सब टूट रहा है हो···मंच के ऊपर निकल

...म यहां बिल्कुल अकेले हैं···क्यों ?

...ती है तो सब अकेले ही होते हैं···

... अलग-अलग हो सकती है। गुजारा नहीं है।

अपूर्व : (चीखकर) तुम्हें मालूम होना चाहिए···

सरमा : (कमरे में पण्डित और झुनझुनवाला को देखकर लौट आती है) तुम धीमे नहीं बोल सकते। यहां दो लोग भी हैं।

लोग···लोग···लोग। मैं तुमसे बात कर रहा हूं···लोगों से नहीं।

लेकिन और लोग भी सुन रहे हैं···

सुन भी लें तो क्या होगा? पुल टूट चुका है···बाढ़ का पानी बढ़ता आ रहा है···यह जगह कभी भी डूब सकती है और हम सब मौत के मुंह में किसी भी पल समा सकते हैं···उसके बाद कौन-सी बात कोई कहीं लेकर आ सकेगा···सब बातें होकर भी यहीं खत्म हो जाएंगी···

पण्डित और झुनझुनवाला आते हैं। पण्डित के हाथ में ताश की गड्डी है। झुनझुनवाला हिसाब का कागज देख रहा है। एक कुत्ते के भौंकने की आवाज आती है।

: (सलमा से) आप हमें देखकर डर गई थीं?

पुल टूटने से पहले आप नहीं डर थे?

भगवान की कृपा से हम बच गए।

के। ···फेंकता है) जो वक्त बचा जाए···(बैठ जाना है)

···, लहरों ···की आवाज, कुत्ते के भौंकने ···की भयानक खामोशी। ···होकर) आप लोग ताश

झुनझुनवाला — नहीं [illegible] नहीं बोल रहे हैं।
[illegible] की मुस्कोटी।

पण्डित — [illegible] का [illegible] नहीं [illegible]
[illegible]

मधुप — नहीं [illegible] नहीं [illegible]

पण्डित — [illegible]

ममता — [illegible] आदमी का [illegible] और [illegible]
[illegible]।

झुनझुनवाला — [illegible] क्यों [illegible] है [illegible] मुझे है
[illegible] है

ममता — [illegible]

मधुप — [illegible]

पण्डित — [illegible]।

झुनझुनवाला — [illegible]

पण्डित — [illegible] है।
[illegible] है। [illegible]
और नीरा [illegible] है। [illegible]
आ रही है।

नीरा — मैं [illegible] पुराना
था।

रीता — आदमी था।

नीरा — पुराना था। आदमी था [illegible] उसकी [illegible] रंग
आदमियों जैसा [illegible] था।

रीता — आदमी था। पुराना था [illegible] आदमियों
जैसा क्यों है?

अनव — आदमी और [illegible] है? आदमी और

रोता : आदमी और जानवर में क्या फर्क होता है ?

लमा : आदमी के लिए जानवर और औरत में फर्क क्या होता है ?

अब्दुल्ला और नियामत भागते हुए आते हैं। दूसरी ओर से पण्डित और झुनझुनवाला आते हैं।

ुल्ला : (घबराया हुआ) अब कोई रास्ता नहीं है। या खुदा।

ण्डित : क्या कहा···

यामत : पानी चारों तरफ से घेरकर बढ़ रहा है···

वाला : इधर पीछे से कोई रास्ता···

यामत : कहाँ का ?

ण्डित : [illegible] था। ये जिन्दगी से भागने और जिन्दगी में घुसने के लिए हमेशा पीछे का रास्ता ही खोजता रहा है ··

वाला : बकवास मत करो······

ुल्ला : (टेलीफोन बार-बार मिलाता है और रख देता है) हिम् ···(फिर मिलाता है। सब चुप हो जाते हैं, फिर रख देता है) या खुदा ! मैं क्या कर सकता हूं, जो होना होगा, होगा। (फिर टेलीफोन का नम्बर मिलाकर हताश भाव से बोलता है) या खुदा···

यामत : खुदा को टेलीफोन कर रहा है।

दुल्ला : या खुदा ! (टेलीफोन का रिसीवर उसके हाथ से छूट जाता है)।

पण्डित : खुदा से बात करनी है तो झुनझुनवाला को करने दे··· ये खुदा से यहाँ भी पीछे के दरवाजे से घुसने की तैयारी बहुत दिनों से कर रहा है।

अब्दुल्ला : हिम्···

तभी एकाएक टूटने की भयानक आवाज ·· और गिरते हुए मकानों की आवाज। शोर

अयूब : हम कितने लोग हैं ?

अब्दुल्ला : एक दो तीन चार···पांच···

नियामत : और बाकी लोग कहां हैं ? बेगम और दो लड़कियां···

झुनझुनवाला : उन्हें छोड़ो।

पण्डित : ग् ग्·· ग् ग् ··हलो। उधर से किसीने उठाया है रिसी-
वर···हलो···(सब टेलीफोन को घेर लेते हैं। सब टेली-
फोन के रिसीवर में चीखते हैं—हलो···हलो···हलो।)

अब्दुल्ला : (रिसीवर लेकर) हलो। हूं···टेलीफोन बंद हो गया है।

झुनझुनवाला : बंद ! (हाथ में लेकर सुनता है और कमानी पर पटक
देता है।)

अब्दुल्ला : या खुदा ! अब क्या होगा !

नियामत : खुदा छुट्टी देगा। (रिसीवर उठाकर अब्दुल्ला की ओर
बढ़ाते हुए) ले, खुदा को फोन कर !

पानी की तेज आवाज, एसेम्बली के एक और
हिस्से के टूटने की आवाज, सब सहमे खड़े रह
जाते हैं।

अब्दुल्ला : मौत बहुत नजदीक है। अब···(हिजाब की बाती खोजता
है) बाती कहां है ?

बाती उठाता है।

नियामत : हिजाब देकर करेगा ?

अब्दुल्ला : (घबराकर) क्या पता पानी कहां तक आ गया है !

झुनझुनवाला : लगता है, यहां तक बढ़ आया है।(इशारा करता है।)

पण्डित : आओ, चलकर देख तो लें, हमें कितने पानी में मरना
है। आओ···

झुनझुनवाला पीछे जाता है।

अयूब : देखें कहां तक आ गया है, आओ···

अब्दुल्ला और नियामत भी पीछे जाते हैं।